उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. तृप्ती सैनी, (असिस्टेंट प्रोफेसर),
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

कविता देवन्दा, (बी.एड.,एम.एड.),
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश :
गत सौ वर्ष में मनुष्य की जनसंख्या में भारी बढ़ोतरी हुई है। इसके कारण अन्न, जल, घर, बिजली, सड़क, वाहन और अन्य वस्तुओं की माँग में भी वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर काफी दबाव पड़ रहा है और वायु, जल तथा भूमि प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। हमारी आज भी आवश्यकता है कि विकास की प्रक्रिया को बिना रोके अपने महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों को खराब होने और इनको अवक्षय को रोके और इसे प्रदूषित होने से बचाएँ। हम श्वसन सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिये वायु पर निर्भर करते हे। वायु प्रदूषण सभी जीवों को क्षति पहुँचाते हैं। वे फसल की वृद्धि एवं उत्पाद कम करते है और इनके कारण पौधे अपरिपक्व अवस्था में मर जाते है। वायु प्रदूषण मनुष्य और पशुओं के श्वसन तंत्र पर काफी नुकसान (हानिकारक) प्रभाव डालते है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार 205 के कणिकीय पदार्थ मानव स्वास्थ्य के लिये सबसे अधिक नुकसानदेह है। साँस अन्दर लेते समय ये सूक्ष्म कणिकीय पदार्थ फेफड़ों के भीतर चले जाते है। इनसे जैसे श्वसन सलंक्षण उत्तेजना, शोध और फेफड़ों की क्षति तथा अकाल मृत्यु हो सकती है।

की वर्ड : *पर्यावरणीय मुद्दे, उच्च माध्यमिक स्तर, जागरूकता का अध्ययन*

१. प्रस्तावना

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2017 में देश में लगभग 12.4 लाख लोगों की मौतें वायु प्रदूषण की वजह से होने वाली बीमारियों से हुई है। ऐसे में जरूरी है कि वायु प्रदूषण सहित अन्य सभी प्रकार के प्रदूषण से स्थायी तौर पर राहत देने वाले उपायों को अपनाया जाए। वायु प्रदूषण नियंत्रण करने का काम केवल सरकार पर न छोड़कर प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी का निवर्हन करते हुए सहयोग करना होगा क्योंकि बिना जन–सहयोग के इसे नियंत्रित कर पाना संभव नहीं है।

घरों में सोलर पैनल लगवाने के साथ आप सौर ऊर्जा पर चलने वाले वाहनों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं जिसमें डीजल या पेट्रोल की भी जरूरत नहीं होती है। सौर ऊर्जा पर चलने वाले वाहनों से दूषित गैस उत्सर्जन की भी समस्या नहीं होती है और पर्यावरण के लिए साईकिल के बाद सोलर वाहन ही सबसे ज्यादा फायदेमंद है।

वाहन खरीदते समय ईंधन–कुशल और वैकल्पिक ईंधन वाले वाहनों पर विचार करें। ई–वाहन बहुत अधिक कुशल है और जब ऊर्जा की कीमत की तुलना की जाती है, आपकी यात्रा की जरूरतों के लिए तरल ईंधन भरने की तुलना में ई–वाहन को र्चा करना कम खर्चीला है। ऊर्जा के नवीकरणीय स्त्रोतों का उपयोग ई–वाहनों के उपयोग को बढ़ा सकता है, जो पर्यावरण के लिए लाभकारी होगा।

''गोइंग ग्रीन'' का अर्थ पर्यावरण के अनुकूल और पारिस्थितिक रूप से जिम्मेदार जीवन शैली का अभ्यास करने के साथ–साथ पर्यावरण की रक्षा और प्राकृतिक संसाधनों को बनाए रखने में मदद करने के लिए निर्णय लेना है। यह मिट्टी, जल मार्ग और हवा में प्रवेश करने वाले प्रदूषणों को कम करने में मदद करता है। हरित होने से वायु प्रदूषण और पर्यावरण प्रदुषकों में कमी आती है।

२. समस्या का औचित्य

प्रकृति में मानवजनित – यदि हम एक चुनौती के रूप में उभर रहे सभी प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों के मूल कारण का विश्लेषण करते है। अधिकांश देखा गया है। पर्यावरणीय मुद्दों का निर्माण किया गया है। जैसे कुछ मुद्दे हैं – वायु प्रदूषण का नियंत्रण, जल प्रदूषण एवं इसका नियंत्रण, प्लास्टिक अपशिष्ट के उपचार सम्बन्धी अध्ययन आदि मुद्दे इसके मध्य सम्मिलित किए गए है।

- पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति युवा पीढ़ी को जागृत किया जाए। किस तरह पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है। पर्यावरणीय संसाधनों का दोहन उस सीमा तक ही किया जाए जिस सीमा तक उनमें प्राकृतिक रूप से वृद्धि होती है। औद्योगिक संस्थाओं द्वारा वायु प्रदूषण संरक्षण अधिनियम का कठोरता से पालन किया जाना चाहिए तथा पालन न करने पर कठोर दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे व्यक्तियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता अधिक बड़ेगी।
- इन सभी घटनाओं ने शोधकर्त्री का ध्यान आकर्षित किया एवं शोधकर्त्री को उपयुक्त विषय पर शोध कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया।

३. सम्बन्धित साहित्य

आशारानी बोहरा (2021) – ''पर्यावरण संरक्षण और भारतीय संस्कृति'' (M. Phill Edu. Revenshow College Cuttak) प्रस्तुत चोध लेख में बताया गया है कि आज बचे हुए मूल्यों को बचाकर रखने और उन्हे पहचान कर नये युग की आवश्यकताओं के अनुरूप पर्नमूल्यांकन करने की जरूरत है। हर पर्व, अनुष्ठान पर बच्चों के जन्म दिन पर पौधे रोपण, उन्हें पुष्प उपहार में दे। बच्चों को प्रकृति के सानिध्य में ले जाकर उन्हे प्रकृति और मनुष्य के रागात्मक संबंध बताएँ। उनके भीतर मानवीय संवेदना जागृत करे। मानवीय और आत्मीयता के संस्कार उन्हें दे तभी तो भावी समाज का सार्थक नवीनीकरण हम कर सकेगे। भविष्य का निर्माण करने वाली भावी पीढ़ी को संस्कारित करके ही तो आने वाले समय को यह एक संस्कारिक समाज का आश्वासन दे पायेंगे। वर्तमान भौतिक और सांस्कृतिक प्रदूष्ज्ञण यही संयुक्त समाधान है।

सुनिता शर्मा 2021 – ''माध्यमिक एवं उच्चमाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मे पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।'' माध्यमिक स्तर के विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अध्ययनरत छात्रों की पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना। उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना। माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्राओं को पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना। निष्कर्ष अच्छा पर्यावरण प्रबन्ध आम आदमी को पर्यावरणीय समस्याओं से छुटकारा दिलाकर सुखी जीवन जीने की एक व्यवस्था है। मनुष्य की पर्यावरणीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे, उसे प्रदूष्ज्ञण का भय न हो, भावी पीढ़ी के प्रति आश्वस्त हो तो उसे फिर किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होगी।

शिवपाल सिंह, 2020 – देहरादून में चूना–पत्थर उद्योग से वायु प्रदूशण का अध्ययन उद्देश्य देहरादून के दो उत्साही युवा शोधकर्ताओ ने यहाँ चूना उद्योग से मिलने वाली बीमारियों का प्रारम्भिक अध्ययन किया। चूना उद्योग को दो भागों में विभाजित करके। निष्कर्ष भट्टीयों में

चूना–पत्थर जलाकर चूना प्राप्त करना। जला हुआ चूना–पत्थर मशीनों में पीसकर चूर्ण बनाना। निष्कर्ष – अध्ययन से स्पष्ट है कि चहरों में उनके निकटवर्ती औद्योगिक प्रदूषण से मानव के स्वास्थ्य को हानी पहुँचती है। हृदयघात, एनिमिया, नेत्र और श्वास संबंधी रोगों का कारण काफी हद तक वायु प्रदूष्ज्ञण ही होता है।

साहू के.सी. 2019 – ''ए क्रिटीकल स्टडी ऑफ दी कन्सेप्सन एण्ड प्रिसेप्स ऑफ एनवायरमेंटल एजूकेशन'' (पर्यावरण शिक्षा के नियमों व अवधारणाओं का गहन अध्ययन) उद्देश्य पर्यावरण घटकों एवं अवधारणाओं के निर्माण करने के लिए अध्ययन करना। पर्यावरण से मानव के संबंधो का अध्ययन करना। पर्यावरण के विभिन्न भागों का अध्ययन करना। पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा को पुर्नगठित करने के लिए अध्ययन करना। निष्कर्ष पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा को विस्तृत रूप से प्राकृतिक व मानव निर्मित प्रकारों मे विभाजित की जाती है। मानव निर्मित पर्यावरण विभिन्न प्रकार के है जैसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, चैक्षिणिक, सौन्दर्यशास्त्र, मनोवैज्ञानिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक आदि का अध्ययन करना।

दामोदर शर्मा, 2019 – ''उच्च शिक्षा स्तर पर आधुनिक जीवन और पर्यावरण परिवेश का अध्ययन।'' उद्देश्य बढ़ता शहरीकरण एवं बिगड़ता पारिस्थितिक सन्तुलन का अध्ययन। बढ़ता पर्यावरण प्रदूष्ज्ञण की समस्या का अध्ययन। प्राकृतिक संसाधनों की शोचनीय स्थिति का अध्ययन। निष्कर्ष अधिकांश आबादी द्रुत गति से शहरों की ओर पलायन कर रहे है। जिससे देश की कुल जनसंख्या का एक चौथाई भाग रोजगार हेतु शहरों में प्रदूषित वातावरण में जीवनयापन करने को अभिशिष्ट है। इसके पास बिजली, पानी और .शौचालय जैसे मूलभूत सुविधाओं 36 का भी अभाव है। जब कि .श्ज्ञहरी क्षेत्रों में विज्ञान में जो चमत्कार दिखाए वे केवल सम्पन्न परिवारों तक ही सीमित होकर रह गये।

४. साहित्य विवेचना

प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है – **आशारानी बोहरा (2021), सुनिता शर्मा 2021, शिवपाल सिंह, 2020,साहू के.सी. 2019,दामोदर शर्मा, 2019** अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में पर्यावरण जागरूकता से सम्बन्धित अनेक शोध कार्य किये गये है। उन्होंने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरीणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया है। लेकिन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन कार्य अभी नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्त्री ने इस समस्या का चयन किया है।

५. समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।''

६. अध्ययन का उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

७. अध्ययन की परिकल्पना

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

८. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। जिसमें कुल प्रश्नों की संख्या 30 है इन्हीं प्रश्नों के आधार पर पांच आयामों की रचना की गई जो निम्न प्रकार है –

वायु प्रदुषण और उसका नियंत्रण, जल प्रदुषण एवं उसका नियंत्रण, रेडियों सक्रिय अपशिष्ट, समतापमण्डल में ओजोन अवक्षय एवं जलवायु परिवर्तन है।

९. न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान हेतु कुल 4 विद्यालयों का चयन किया गया है। जिसमें 2 सरकारी व 2 गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 व 12 की कुल संख्या 200 है।

१०. शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।।

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	टी–मूल्य (t-Value)	सार्थकता स्तर
उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	100	14.95	2.38	0.24	0.05 स्तर पर = 1.98
उच्च माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	100	14.85	1.21		

११. परिणाम

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 14.95 व 14.85 प्राप्त हुआ है जबकि प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 2.38 व 1.21 प्राप्त हुआ है। दोनों समूह के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन की तुलना करने पर टी–अनुपात का मान 0.24 प्राप्त हुआ है, जो कि स्वतंत्रता कोटि 118 पर सार्थकता स्तर के मान 1.98 से कम प्राप्त हुआ है। अतः शोध कार्य में पूर्व में निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत होती है क्योंकि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता का आयोजन होता रहता है।

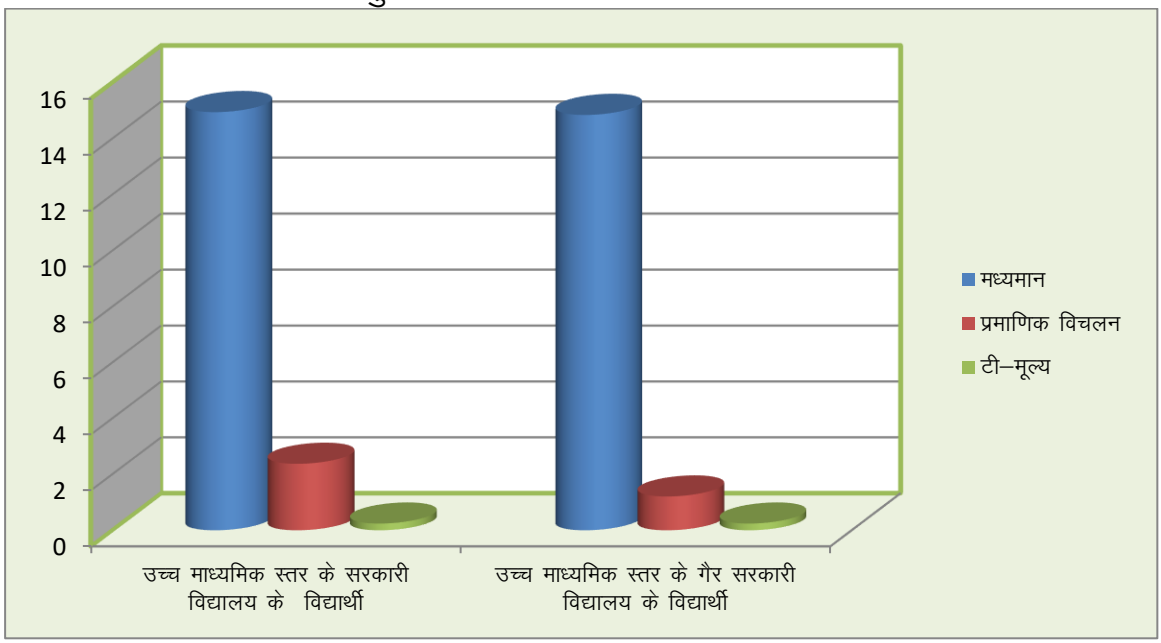

१२. निष्कर्ष

शोधकत्री द्वारा निर्धारित सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मुद्दो के प्रति जागरूकता का अध्ययन के मध्य टी–मूल्य 0.24 प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना स्वीकृत है। अतः सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों के मध्य पर्यावरणीय मुद्दो के प्रति जागरुकता का अध्ययन में सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. आशारानी बोहरा (2021). ''पर्यावरण संरक्षण और भारतीय संस्कृति'' (M. Phill Edu. Revenshow College Cuttak)
१. सुनिता शर्मा (2021). ''माध्यमिक एवं उच्चमाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मे पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।''
२. शिवपाल सिंह, (2020). देहरादून में चूना–पत्थर उद्योग से वायु प्रदूषण का अध्ययन
३. साहू के.सी. (2019). ''ए क्रिटीकल स्टडी ऑफ दी कन्सेप्सन एण्ड प्रिसेप्स ऑफ एनवायरमेंटल एजूकेशन'' (पर्यावरण शिक्षा के नियमों व अवधारणाओं का गहन अध्ययन)
४. दामोदर शर्मा, (2019). ''उच्च शिक्षा स्तर पर आधुनिक जीवन और पर्यावरण परिवेश का अध्ययन।''
५. www.historyftele.com
६. www.edu.org
७. www.iml jou ulf edu
८. www.questia.com
९. www.current.org